ISSN: 0973-0583

पटना के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावकों का प्रोत्साहन का प्रभाव

आशा सिन्हा

शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, केपिटल विश्वविद्यालय, कोडरमा, झारखण्ड

सार

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है। सर्वांगीण विकास से तात्पर्य व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक या नैतिक विकास से है। औपचारिक शिक्षा के सन्दर्भ में बालक के विकास का सारा दारोमदार परिवार, समाज एवं विद्यालय पर तथा वहाँ के संसाधन और वातावरण पर होता है। बालक प्रारम्भ में कोरे कागज के समान होता है। समय के साथ वह पहले सरल विचारों को मन में धारण करता है तथा कालान्तर में विचारों से विचारों को जोड़कर अपने ज्ञान में वृद्धि करता जाता है। परिवार एवं समाज का वातावरण बालकों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। अच्छे पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण में ही बालक का समुचित विकास होता हैं तथा अच्छे पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण में ही बालक के मन में सामाजिक विकास की भावना जाग्रत होती है। जिससे बालक समाज में अपनी भूमिका समझ पाता है तथा उसके अनुसार अपनी भूमिका का निर्वाह करता है। पारिवारिक एवं सामाजिक परिवेश का बालकों के बुद्धि के विकास पर सक्रिय एवं महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। बालक अपने पारिवारिक एवं सामाजिक गुणों के आधार पर ही एक बेहतर नागरिक बनता है। परिस्थितियाँ ही उन्हें बहुमुखी विकास एवं वैयक्तिक उन्नति के अवसर प्रदान करती है। बालकों के नैतिक एवं बौद्धिक विकास का सम्पूर्ण दायित्व परिवार एवं समाज पर होता है। परिवार एवं समाज का वातावरण बच्चों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। एक अभिभावक बच्चों के सर्वांगीण विकास करने में सहायक होते हैं परन्तु यह भी अभिभावक के प्रोत्साहन पर निर्भर करता है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यालयों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावक प्रोत्साहन के प्रभाव की समीक्षा की गई है तथा बताया गया है कि विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक प्रोत्साहन का गहरा प्रभाव पड़ता है।

परिचय :

शिक्षा व्यक्ति के लिये एक ऐसा अनुकूल वातावरण तैयार करती हैं जो व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक क्षमताओं के निरन्तर विकास में सहायक सिद्ध होता है। बालक का विकास भी शिक्षा का ही प्रतिफल होता है। व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार की अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती रहती है और वह अच्छे पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण तथा परिस्थितियों से बेहतर शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने का प्रयास करता है। जो व्यक्ति अच्छे पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण व परिस्थितियों में अपने को समायोजित कर लेता है, वह अपने शैक्षिक उपलब्धि को आसानी से प्राप्त कर लेता है एवं प्रसन्न रहता है और जो समायोजन स्थापित नहीं कर पाता है। वह असन्तोष, कुण्ठा, द्वन्द्व एवं तनाव का शिकार हो जाता है एवं अपने लक्ष्य से भटक जाता है, जिससे विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक एवं शैक्षिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को जीवन के कठोर यर्थाथपरक और जटिल समस्याओं का सामना करना सिखाना चाहिए ताकि विद्यार्थीगण जीवन के स्पंदन को महसूस कर सकें और तमाम तरह के प्रश्नों को समझने और परखने योग्य बन सकें। भगवान ने मनुष्य को सीखने की अद्‌भुत क्षमता प्रदान की है जिसके द्वारा मनुष्य अपने को जानता और समझता है, इससे वह समाज में अपनी जगह बनाकर रहता है और यहीं मनुष्य की अंदरूनी क्षमता की विशेषता है कि वह लोगों के साथ भाई चारा और प्रतिस्पर्धा के सम्बन्धों के साथ रहता है। वर्तमान परिस्थितियों में पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से कार्य करने में बाधा पहुँचाता है।

परिवार का महत्व वर्तमान समय में कम होता जा रहा है। प्राचीन काल में परिवार ही सब कुछ था। सामाजिकता की भावना पारिवारिक भावना से ही प्रगति पाती थी, परन्तु वर्तमान समय में समाज का ढ़ाचा बदला गया है और आर्थिक स्थिति क्षिण-भिन्न हो गयी है। पारिवारिक जीवन पर इसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। इस समय हर एक व्यक्ति को अपने लिए रोजी-रोटी की समस्या को हल करना है। आर्थिक स्थिति में परिवर्तन के कारण कोई भी व्यक्ति घर बैठकर दूसरे पर आश्रित होकर नहीं खा सकता। हर एक को कुछ न कुछ काम-धन्धा करना पड़ता है। इसके कारण संयुक्त परिवार नष्ट-भ्रष्ट होता जा रहा है और एकल परिवार की स्थापना होने लगती है जिसमें पति-पत्नी ही मुख्य सदस्य रह गये हैं और माता-पिता को अलग रखने का दृष्टिकोण विकसित होने लगा है। यह एकल परिवार भी आजीविका कमाने में इतने व्यस्त है कि उन्हें अपने बच्चों को स्वयं शिक्षा देने का समय नहीं मिलता। आज इस प्रकार के अनेक साधन उपलब्ध है जहाँ माता-पिता काम पर जाते समय अपने बच्चों को छोड़ जाते है और काम से वापस आने पर उन्हें ले जाते है। इस प्रकार का दृष्टिकोण बालकों के विकास की दृष्टि से अच्छा नहीं है। क्योंकि जो प्यार बालकों को माँ-बाप से मिलता है उन्हें कभी नहीं मिल सकता जहाँ बच्चों को शुल्क देकर संभाला जाता है।

अभिभावक प्रोत्साहन का विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि एवं बुद्धि के विकास पर सक्रिय एवं महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। विद्यार्थी अपने अभिभावक प्रोत्साहन के आधार पर ही एक बेहतर नागरिक बनता है। परिस्थितियाँ ही उन्हें बहुमुखी विकास एवं वैयक्तिक उन्नति के अवसर प्रदान करती है। विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं बुद्धि के विकास का सम्पूर्ण दायित्व परिवार एवं समाज पर होता है। परिवार एवं समाज का वातावरण विद्यार्थियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। अच्छे पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण में ही बालक का समुचित विकास होता है जिससे बालक समाज में अपनी भूमिका समझ पाता है। विद्यार्थियों के लिए अभिभावकों के अन्दर प्रोत्साहन की भावना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि यदि वह समायोजित नहीं होगा तो वह अपनी शिक्षा प्राप्ति का लक्ष्य नहीं प्राप्त कर पायेगा और समाज के हितों के अनुकूल कार्य नहीं कर सकेगा और न ही सफलता की प्राप्ति कर सकेगा। यदि विद्यार्थी स्वयं को विद्यालय में समायोजित कर लेता है तो वह समाज में भी आसानी से समायोजन कर सकता है। व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार की अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती रहती है और वह अच्छे अभिभावक प्रोत्साहन तथा परिस्थितियों से बेहतर शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने का प्रयास करता है। जो व्यक्ति अच्छे अभिभावक प्रोत्साहन व परिस्थितियों में अपने को समायोजित कर लेता है, वह अपने शैक्षणिक उपलब्धि को आसानी से प्राप्त कर लेता है एवं प्रसन्न रहता है और जो समायोजन स्थापित नहीं कर पाता है वह असंतोष, कुण्ठा, द्वन्द्व एवं तनाव का शिकार हो जाता है एवं अपने लक्ष्य से भटक जाता है, जिससे विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक एवं शैक्षिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अध्ययन से मनुष्य पुनः जन्म लेता है और पूर्णता की ओर अग्रसर होता है। शिक्षा के द्वारा वह अपने चतुर्दिक वातावरण को भी परिष्कृत करता है तथा विश्व को रहने योग्य बनाता है और इस कार्य में अच्छे पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण प्रमुख भूमिका निभाता है।

आज शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। शिक्षा बालक की अंर्तनिहित शक्तियों की खोज करती है। शिक्षक मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण के द्वारा उन शक्तियों को विकसित कर बालकों को सुंदर एवं संपन्न बनाता है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, अर्थात् व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन ही शिक्षाकाल है। बालक सदैव अपने अभिभावक (माता-पिता), भाई-बहन, मित्र-सखा, एवं अध्यापक से हर पल, हर क्षण, प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रुप से कुछ न कुछ सीखता रहता है। शिक्षा की इस प्रक्रिया में औपचारिक रुप से उसके अध्यापक एवं अभिभावक की महत्त्वपूर्ण एवं अहम् भूमिका होती है। शिक्षा के क्षेत्र में एवं व्यक्तित्व के विकास में अभिभावक का प्रोत्साहन विशेष प्रभाव डालने वाला कारक है।

आज प्रत्येक अभिभावक की हार्दिक आकांक्षा होती है कि उसका बालक प्रत्येक क्षेत्र में उच्च उपलब्धि प्राप्त करें। इसके लिए वह हर संभव प्रयास भी करता है। उसे हर प्रकार की आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराता है। अतः बालकों को अभिभावकों से आपेक्षित प्रोत्साहन उचित वातावरण तथा आवश्यक सुविधाएँ मिलनी चाहिए। अभिभावक प्रोत्साहन जहाँ बालकों की पाठ-विषय के प्रति रुचियों को बढ़ाता है। वह अनुकूल वातावरण एवं आवश्यक सुविधाएँ, इन रुचियों को उपलब्धि में बदलने के लिए सहायक साधन का कार्य करती हैं तथा बालक उच्च

शैक्षिक उपलब्धि की ओर अग्रसर होता है। ऐसे परिवारों में जहाँ बालकों की अपने अभिभावकों से संबद्धता एवं समायोजन अच्छा रहता है और उसे अपने विकास के लिए उचित वातावरण मिलता है, वहाँ बालकों की शैक्षणिक उपलब्धि उच्च स्तर की होती है। इन परिवारों में अभिभावक अपने बालकों की प्रत्येक गतिविधियों के प्रति सचेत होते हैं तथा जिन बालकों को अभिभावक से उचित प्रोत्साहन नही मिल पाता या अभिभावक अपने बालकों के क्रियाकलापों के प्रति रुचि नही दिखाते, उनकी शैक्षणिक उपलब्धि निम्न होती हैं इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अभिभावक प्रोत्साहन का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर भी पड़ता है।

परिवार बालक के सीखने का प्रथम स्थान है। यही वह स्थान है जहाँ से बालक में महान गुण उत्पन्न होते हैं। यही पर बालक उदारता और अनुदारता निस्वार्थ और स्वार्थ, न्याय और अन्याय, सत्य और असत्य, परिश्रम और आलस्य में अंतर सीखता है। माता-पिता परिवार की धुरी है, उन्हीं के इर्द गिर्द संपूर्ण परिवार संगठित रहता है। प्रेम, स्नेह एवं सौहार्द परिवार के आधार है। यहाँ पर सिद्धांतों का साक्षात दर्शन होता है। महामना मदन मोहन मालवीय कहा करते थे कि मैंने बचपन में जो कुछ सीखा था वही मेरी असली शिक्षा थी। महात्मा गाँधी ने अपनी माता से धार्मिक आचरण की शिक्षा प्राप्त की थी। जगदीश चंद्र बसु को अपने महान, वैज्ञानिक अन्वेषण की सूझ अपनी माता की उक्ति से ही मिली थी। जीजाबाई ने शिवाजी में वीरता की भावना भर दी थी। भारतीय साहित्य मे माता को आदि गुरु कहा गया है। भारतीय संस्कृति में मातृदेव, पितृदेव, आचार्य देव का उपदेश दिया जाता था। बालक परिवार के ढंग, व्यवहार और परंपराओं को अपनाता है। इस प्रकार बालक के विकास पर परिवार का स्थाई प्रभाव पड़ता है।

परिवार में अभिभावक की भूमिका महत्वपूर्ण है। बालकों को अच्छे संस्कार देना अभिभावकों का उत्तरदायित्व होता है। अभिभावकों और बालकों के संबंध बहुत कुछ अभिभावकों की अभिवृतियों से प्रभावित होते हैं। एण्डरसन ने कहा है कि 80 प्रतिशत अपराधी असहानुभूति घरों से आते है। जब बालक के माता-पिता उसके साथ शुद्ध ईमानदारी तथा सहनशीलतापूर्ण व्यवहार करते है, तब बालक का व्यवहार भी न्यायपूर्ण, सत्यपूर्ण और सहनशीलतापूर्ण होता है। अभिभावकों का व्यवहार बालकों के व्यवहार को प्रभावित करता है। अभिभावकों के अनुकूल व्यवहार से बालक में आनंद, मित्रता, सहयोग, संरचनात्मकता जैसे लक्षण उत्पन्न होते हैं। अभिभावक अभिवृत्ति का प्रभाव शैक्षिक विकास पर पड़ता है। अभिभावक यदि बालक की समय-समय पर प्रशंसा करते हैं, उन्हें प्रोत्साहित करते हैं, तो बालक का व्यवहार भी प्रशंसनीय बन जाता है। विद्यालायों की उपलब्धि में अभिभावक प्रोत्साहन एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अभिभावक प्रोत्साहन शैक्षणिक विकास पर प्रभाव के अध्ययन में पाया कि अभिभावक प्रोत्साहन तथा शैक्षणिक उपलब्धि के समय सकारात्मक उच्च सहसम्बन्ध होता है। अतः विद्यालयों की उपलब्धि में अभिभावक प्रोत्साहन एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

किशोरावस्था में विद्यालयों में अनेक कांतिकारी परिवर्तन होते हैं। वह अपने व्यक्तित्व के प्रति अत्यंत जागरूक हो जाता हैं उसमें चेतन, तर्क, निर्णय करने की शक्ति विकसित होती है। इस अवस्था में किशोरों का झुकाव जिस ओर हो जाता है, उसी दिशा में आगे बढता है। किशोरावस्था में आवेगों और संवेगों में परिवर्तनशीलता होती है। इस कारण उनको समझ पाना कठिन होता है। इस समय अभिभावकों के सहयोग की आवश्यकता होती है। अध्ययन में पाया गया है कि अभिभावकों के सहयोग का विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है। किशोरों की आयु जैसे-जैसे बढ़ने लगती है, अभिभावकों को यह अनुभव होने लगता है कि उन्हें आयु के अनुसार उत्तरदायित्व और कार्य देने चाहिए। यदि उन्हें कार्य में कोई कठिनाई समझ में आती है तो अभिभावको के प्रोत्साहन से उन्हें दूर करने में सहायता मिलती हैं।

अभिभावकों के प्रोत्साहन से किशोरों को ज्ञान अर्जित करने के अवसर प्राप्त होते हैं। विभिन्न प्रकार के ज्ञान के द्वारा विद्यालयों में तर्क शक्ति, चेतन शक्ति, कल्पना शक्ति का विकास होता है, जिसके द्वारा उनके व्यवहार मे परिवर्तन आता है और ये परिवर्तन अभिप्रेरक तत्वों द्वारा होते है। उपलब्धि अभिप्रेरक द्वारा व्यक्ति सफलता प्राप्त करने का प्रयास करता है। यह प्रेरणा जिन विद्यालयों में अधिक पाई जाती है। वे ऐसा करना पसंद करते हैं, जिनमें उनकी प्रशंसा हो। अभिभावकों का बच्चों के साथ विचार-विनिमय और उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य घनात्मक संबंध होता है। उपलब्धि अभिप्रेरणा को सर्वाधिक महत्व मैक्सीलैण्ड तथा एटकिन्सन ने दिया। इन अभिप्रेरक द्वारा विद्यार्थी किसी भी प्रतियोगिता में सर्वोच्च स्थान पाने का प्रयास करता है और अपने जीवन को उन्नत बनाने का प्रयास करता है। विशेष अधिकार प्राप्त विद्यालयों की

उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा अधिकार से वंचित विद्यालयों की उपलब्ध अभिप्रेरणा के अध्ययन में पाया गया कि विशेष अधिकार प्राप्त विद्यालयों की उपलब्धि अभिप्रेरणा अधिक होती है। अतः अभिभावक प्रोत्साहन से विद्यालयों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है।

प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर की शिक्षा के बीच स्थित होने के कारण माध्यमिक स्तर की शिक्षा सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। इसका प्रमुख कारण उच्च माध्यमिक शिक्षा मानव विकास की किशोरावस्था से संबंधित होने तथा भावी युवा शाक्ति के नेतृत्व के प्रशिक्षण का प्रथम केंद्र होने के कारण उच्च माध्यमिक शिक्षा का स्तर सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी तथा सांस्कृतिक क्षमता को प्रभावित करती है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं, उन्हें न तो प्रौढ़ माना जाता है और न ही बालक। यह एक परिवर्तन की अवस्था है। किशोरावस्था में विद्यालयों को शिक्षकों के साथ-साथ अभिभावकों के प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। यदि उचित दिशा निर्देशन व प्रोत्साहन न दिया जाए तो वे अपने मार्ग से भटक भी सकते हैं।

अभिभावकों का प्रोत्साहन एक सही प्रयास है, जो कल्पना को कियाशील बनाती है। अभिभावकों का प्रोत्साहन विद्यालयों को कार्य करने, सफल होने तथा लक्ष्य पाने की है। विद्यालयों को प्रेरित करने के लिए आंतरिक प्रेरणा का प्रयोग होना चाहिए। जिससे वे स्वयं अपनी इच्छा से कार्य कर सके। जब कोई भी किसी भी अन्तर्निहित क्षमताओं का आंकलन कर उसे उनसे परिचित कराकर लक्ष्य पूर्ति हेतु प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करता है तो निश्चित ही वह उसकी सुप्त अवस्था को जागृत करता है।

एक विद्यार्थी के लिए अभिभावक के प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है, जिससे वह अपने लक्ष्यों की ओर प्रेरित हो सके और ज्ञान अर्जित करने की क्षमता, सृजन शाक्ति और रूचियों को विकसित कर सके। कई विद्वानों ने अध्ययन में अभिभावक-बालक संबंध और उपलब्धि अभिप्रेरणा में संबंध पाया। उच्च अभिभावक बालक संबंध के विद्यालायों की उपलब्धि अभिप्रेरणा अधिक पाई गई। अतः यह कहा जा सकता है अभिभावकों के प्रोत्साहन का, अभिभावकों की अभिवृत्ति, अभिभावक बालक संबंध का प्रभाव विद्यालयों की उपलब्धि पर पड़ता है। यह प्रभाव सकरात्मक और नकरात्मक दोनों प्रकार का हो सकता है। उच्च विद्यालय स्तर पर समस्याओं को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि इस स्तर पर अभिभावक प्रोत्साहन के संदर्भ में कम कार्य हुआ है। अतः इस स्तर पर अभिभावक प्रोत्साहन का अध्ययन करना आवश्यक हो गया है। इस बात से प्रेरित होकर मैं इस समस्या को लेकर यह अध्ययन करने की कोशिश की है कि अभिभावक प्रोत्साहन का विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष :

किसी राष्ट्र के विकास में बच्चों की अहम भूमिका होती है और बच्चों की शिक्षा में अभिभावक प्रोत्साहन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक अभिभावक बच्चों के सर्वांगीण विकास करने में सहायक होते हैं, परन्तु यह भी अभिभावक के प्रोत्साहन पर निर्भर करता है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यालयों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावक प्रोत्साहन के प्रभाव की समीक्षा की गई है तथा बताया गया है कि विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक प्रोत्साहन का गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि अभिभावक अपने बालक की रूचियों एवं उपलब्धियों के बारे में ज्ञान रखते हैं तथा उनके समक्ष आदर्श प्रस्तुत करते हुए उनकी रूचि तथा उपलब्धि के क्षेत्र में प्रेरित करते हैं तो बालक की शैक्षणिक उपलब्धि प्रभावित होती है तथा उच्चता को प्राप्त करती है।

संदर्भ ग्रथ सूचीः

1. कुकरेजा, सुजीत.(2014), अभिभावक प्रोत्साहन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, यश पब्लिकेशन, आगरा, पृ. 87.
2. शुभा दास (2011), अभिभावक प्रोत्साहन का बालक के व्यक्तित्व पर प्रभाव, सीवांक प्रकाशन, ग्वालियर, पृ. 147.
3. मालवीय, डॉ0 राजीव, (2009), शिक्षा के नूतन आयाम, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ. 41
4. त्यागी, जी. एस. डी. एवं पाठक, डी.पी (2008), शिक्षा के सामान्य सिद्धांत, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. 57.
5. भण्डारी, अजीत.(1998), अभिभावक प्रोत्साहन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव, उपकार प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 214.
6. विजी (1992), उच्च अभिभावक प्रोत्साहित एवं निम्न अभिभावक प्रोत्साहित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, पृ. 75.